अंक
19
मानसून
2015

सफर

सफर मार्ग पर साथ–साथ

सरकार के साथ कार्य करना

सरकार के साथ कार्य करना – सरकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद साहापुर, उत्तरखंड में बुरांस होप समूह द्वारा विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया जा रहा है। चित्र – द्वारा संजीव इसाचार, बुरांस होप

संपादकीय

गैरसरकारी संगठनों के लिये यह आवश्यक है कि वे सरकार के साथ साझेदारी में कार्य करें, क्योंकि दीर्घकाल में स्वास्थ्य शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के लिये सरकार को ही ज़िम्मेदारी लेना है एवं सरकार ही एकमात्र ऐसी संरचना है जो कि इस सारी जनसंख्या के साथ इन सभी क्षेत्रों में वित्त एवं शासनादेश के साथ कार्य कर सकें। जबकि सरकार मुख्य सेवा प्रदाता है, गैर सरकारी संगठनों को चेतना की तरह कार्य करना चाहिये, वे जो कि अत्यधिक आवश्यकता की चीजों को देख सकें एंव प्रशिक्षक की तरह यह सुनिश्चित कर सकें कि विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों के लाभ समुदाय के सदस्यों तक प्राप्य हैं।

सरकार के साथ कार्य करने के लिये, गैर सरकारी संगठनों को आवश्यक है कि वे कार्यो के विवरण, संबध निर्माण एवं उनके द्वारा संपादित किये गये कार्यो के सकारात्मक परिणामें को दर्शाते हुये सरकार की स्वीकार्यता एवं विश्वास को हासिल करें। गैर सरकारी संगठनों के पास क्षमता होनी चाहिये की वे सरकार की आवश्यकतओं के अनुरूप आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान कर सकें। सरकार के साथ साझेदारी में कार्य करते हुये, गैर सरकारी संगठन, समुदायों के साथ घनिष्ठता से जुड़े रहते हैं, अपने संसाधनों एवं कौशल का अधिकाधिक प्रयोग कर सकते हैं एवं इस संबध में अपनी समझ बढ़ा सकते हैं। कि, किस तरह प्रभावशाली तरह से मध्यस्थता को आंका जा सके । सरकारी कार्यक्रमों के साथ साझेदारी होने से नये ससाधनों, विशेषज्ञता एवं ऐसी तकनीकी व कौशल तक पहुँच सुगम हो जाती है जिससे हम (गैर सरकारी संगठन) उन समुदायों के प्रति स्वयं की क्षमता एंव दृश्यता का निर्माण कर सकें जिनके साथ हम कार्य करते हैं।

सफर का यह अंक सरकार के साथ कार्य करने पर केंद्रित है, एवं उन तरीकों पर जिनके द्वारा हम अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं एवं हम इस अंक मे सरकार के साथ साझेदारी पर श्रेष्ठ अभ्यासों पर विचार विमर्श कर रहे हैं। इस अंक को पढ़ना आपके लिये आनंददायक हो!

डॉ0 कैरन मथ्यास – सफर के संपादकीय समूह के लिये।

अन्दर क्या है...

संपादकीय 1
उपासना 2
सरकार के साथ कार्य करना 3
सफलता की कहानियाँ 5
सरकार के साथ साझेदारी 5
साक्षात्कार – श्री लॉरेन्स सिंह 7
सरकार के साथ कार्य करना 10
एच.आर. गतिविधियाँ, आगे होने वाली गतिविधियों 11
सीएचडीपी समाचार 12

A publication of:
Community Health & Development
Emmanuel Hospital Association

उपासना

सरकार के साथ कार्य करना

(रेव्ह. प्रकाशजार्ज)

धर्मपुस्तक को पढ़ने पर हमें यह ज्ञात हुआ कि इस विषय पर बहुत ही कम लिखा गया है। बाईबल लिखे जाने के तत्कालीन समय में कुछ ही सामाजिक संगठन थे एवं हम बाईबल में कहीं भी यह नहीं पाते कि उस दौरान कलीसिया, सरकार के साथ साझेदारी में कार्य करती थी। आज की स्थिति में हम यह देखते है कि गैर सरकरी संगठन प्रयत्न करते हैं कि वे सरकार से सहायता प्राप्त करके सुमदायों में गरीबो एवं हाशिये पर रहने वाले लोगों के लिये कार्य कर सकें ।

कई बार ऐसी स्थितियां भी होती है जब सरकार गैर सरकारी संगठनों की सहायता से अपने कार्यक्रमों को कियान्वित करती है। इस तरह के करारों में मसीही गैर सरकारी संगठनों के लिये किस तरह के दिशा निर्देषों होने चाहिये? मैं कुछ निर्देशों की सूची देना चाहता हूँ।

1. सरकार के साथ साझेदारी में कार्य करने के दौरान मसीही मूल्यों व अभ्यासों के साथ किसी तरह का समझौता नहीं किया जाना चाहिये अपितु ये मूल्य व अभ्यास ही सर्वोच्च होने चाहिये। उदाहरण के लिये यदि हमारे सभी कार्यक्रम प्रार्थना द्वारा आरंभ होते है तो सिर्फ इसलिये हमें इसे नहीं संक्षिप्त करना चाहिये कि हम सरकार से वित्तीय सहायता ले रहे हैं। दूसरा उदाहरण यह है कि परमेश्वर के दिन की पवित्रता के साथ समझौता नहीं किया जाना चाहिये ।
2. मसीही नीति अभ्यासों के साथ किसी तरह का समझौता नहीं किया जाना चाहिये। सरकारी वित्त अनुदानों की प्राप्ति के लिये यदि किसी तरह के घूस की मांग हो तो हमें प्रतिबद्व होना चाहिये कि हर कीमत पर हम उचित तरह से ही कार्य करेंगे। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि हमें परमेश्वर की महिमा के लिये प्रयत्न करना है न कि कार्यक्रमों एवं उससे मिलने वाले लाभ पर। जैसा कि पौलुस कहते हैं, ''जो भी तुम करते हो, वो सब परमेश्वर की महिमा के लिये करो'' (1 कुरिन्थियो 10:31)
3. सरकार के साथ साझेदारी में कार्य ना करें यदि उसकी नीतियाँ अभ्यास एवं प्रक्रियायें धर्मशास्त्र से विपरीत हैं।

धर्मशास्त्र के अनुसार सभी सरकारें परमेश्वर के द्वारा स्थापित की जाती हैं। सरकार के साथ साझेदारी में कार्य करने के दौरान मसीहियों को अवसर प्राप्त होता है कि वे सरकार को अच्छा व उचित करने के लिये प्रभावित कर सकते हैं। ऐसी स्थितियों में ही हम पृथ्वी का नमक एवं ज्योति कहलाने के लिये सृजे गये हैं। अतः ऐसे अवसरो को प्राप्त करने का प्रयास करें लेकिन साथ ही साथ अपने मसीही अस्तित्व को भी कायम रखें ।

सरकार के साथ कार्य करना

(सोमेश प्रताप सिंह, डिप्टी डायरेक्टर, सामुदायिक स्वास्थय एवं विकास कार्यक्रम)

सदियों से राज्य एवं उसके लोगों के मध्य क्रियाशील संबंध रहा है। राज्य की संरचना एवं रूप रेखा सदाकाल से नये नये स्वरूप लेती रही है और इसके फलस्वरूप राज्य एवं उसके मध्य के लोगों का रिश्ता भी नये स्वरूप लेता रहा है। विश्व के विभिन्न भागों में अलग–अलग समूह राज्य के विवेक के प्रहरी के रूप में भूमिका निभाते रहे हैं, परंतु धार्मिक एवं षैक्षणिक संस्थान मुख्य रूप से इस भूमिका में रहे हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में बिल्कुल नयी दिशा में तेज़ी से परिवर्तन हुआ। पूरा विश्व तीस वर्षों के अंतराल में दो विश्व युद्धों व उनके नतीजों का गवाह बना हुआ था। साथ ही प्रौधोगिकी के विकास से सूचनायें एवं लोग बहुत तेज़ी से विश्व के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में पहुँचने लगे तथा विचारों एवं दर्शनशास्त्र का आदान प्रदान बड़े स्तर पर बढ़कर होने लगा। और इन सबका नतीजा संयुक्त राष्ट्र की स्थापना के रूप में हुआ जिसने राष्ट्रों के मध्य नियमित वार्तालाप को हकीकत बना दिया। स्वतंत्रता, लोकतंत्र, मानवधिकार, सरकार की जवावदेही व उसके जैसे अन्य विचार कुछ चुनिंदा देशों की जागीर से स्वतंत्र हो वैश्विक आकार लेने लगे। विश्व राज्यों के द्वारा इस प्रकार के विचारों को उन देशों में भी प्रचारित किया जाने लगा जो उनसे सहमति ना रखते थे। संयुक्त राष्ट्र द्वारा कई प्रस्ताव पारित किये जाने और कई देशों द्वारा उन पर हस्ताक्षार किये जाने से राष्ट्रों में एक जवाबदेही प्रक्रिया आकार लेने लगी।

गैर सरकारी संगठनों की मुख्य भूमिका अनाथों, विधवाओं, भिखारी आदि लोगों के लिये धर्मार्थ संस्थान चलाने की मानी जाती थी अर्थात ऐसे वर्ग जिनके लिये समाज के पास कोई नियमित व्यवस्था ना थी। भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान व उसके पश्चात् संस्थाओं को विवेक के प्रहरी के तौर पर राज्य में जगह मिली और हाल के वर्शों में ये संस्थायें नियमित जवावदेही की प्रक्रिया का हिस्सा बन गई।

भारत में सरकार के साथ कार्य करने के कई मायने हो सकते हैं जैसे i) सरकार द्वारा वित्त पोषित परियोजना चलाना या किसी अन्य स्त्रोत से वित्त पोषित परियोजना द्वारा सरकारी सेवाओं को मजबूत करना, ii) सरकारी कार्यों की जवावदेही एवं गुणवत्ता में सुधार करना, iii) या सरकार को हर नागरिक के अधिकारों का सम्मान करने के लिये जवाबदेही बनाना। सरकार के साथ कार्य करने के प्रत्येक तरीके के कई पहलू होते हैं। अकसर सरकारी व्यवस्था संस्थाओं द्वारा सरकारी वित्त पोशित परियोजना चलाने में सहजता अनुभव करते हैं परंतु इस व्यवस्था में

कई अनकहे छुपे समझौते शामिल होते हैं। सरकारी वित्त पोषित परियोजना चलाने के मेरे अनुभव में जिन तीन चीजों ने मदद करी वह थीं पूर्ण पारदर्शिता, दृढ़ता से डटे रहना एवं व्यवस्था के साथ नियमित संपर्क रखना। पर यह सब काफी समय ले लेता है और यह सोचने पर मजबूर करता है कि इतनी समय और ताकत लगाना क्या वास्तव में लाभपरक है। दूसरा यदि संस्था अपने संसाधन लगाकर सरकारी सेवाओं को मजबूत करती है तो हमेशा एक अच्छे क्रियाशील संबंध स्थापित होते हैं व राज्य प्रशंसात्मक भूमिका में रहते हैं। कुछ हमारी परियोजना कलीकि एवं स्वास्थ्य शिविर तथा एच.आई.वी. से

जुड़ी गतिविधियों का संचालन उन जगहों पर करते हैं जहाँ सरकार अपने निश्क्रिय तंत्र की वजह से कार्य नहीं कर पा रही। ऐसी गतिविधियां सरकार द्वारा बहुत प्रोत्साहित की जाती हैं परंतु इनके साथ सरकार का अपनी जिम्मेदारी से विमुख होने का खतरा बना रहता है। सामान्य तौर पर सरकार अपनी क्षमता वृद्धि में निवेश को प्रोत्साहित करती हैं परंतु मजबूत नौकरशाही किसी बाहरी संस्था के प्रति जवाबदेही होने में कठिनाई पाती है। इसका उदाहरण हमें समाकेतिक बाल विकास परियोजना में मिलता है जहाँ कि क्षमता वृद्धि निवेश पूरा होने के बाद जवाबदेही प्रक्रिया निष्क्रिय हो गई। सिद्धांतः जानकारी का विभिन्न स्त्रोतों से लेना व मिलान करना अच्छी बात है परंतु भारत में सरकारी व्यवस्था अलग राय से इत्तफाक रखने को कठिन पाती है। संस्थाओं के पास कानून बनाने वाली संस्थाओं, नौकरशाही अथवा न्यायपालिका के समान ना तो संवैधनिक आधार होता है और ना ही पत्रकारिता के समान सामाजिक पहचान, अतः ये इनमे से एक या सारी संस्थाओं पर अपने विचार सिद्धांत एवं आग्रह रखने के लिये निर्भर होती है।

सहारनपुर जिला अस्पताल–संबंध निर्माण हेतु शिफा समूह का दौरा। तस्वीर कैरन मथ्यास

संस्थाओं को पर्याप्त स्थान एवं आवाज़ उन समाजों में प्राप्त होती है जिनके आधार में मजबूत लोकतंत्रिक मूल्य होते हैं जहाँ नागरिक की आवाज उसके हैसियत से इतर मायने रखती है। जिन समाजों में सामंती मानसिकता का प्रभाव होता है वहाँ पर स्थापित संस्थाओं की आवाज़ सुनी जाती है व अन्य आवाज़ों को अकसर विरोध की आवाज़ माना जाता है। यहाँ पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने स्वेच्छा से लोकतंत्र की यात्रा प्रारंभ की परंतु उससे पूर्व यह बहुत लंबे समय तक सामंती समाज रहा है एक इतने समय तक जितना कि सामूहिक अवचेतन में सामंती मूल्यों की गहराई तक छाप छोड़ने के लिये पर्याप्त है। अतः इन गहराई तक जमे हुये सामंती मूल्यों के प्रभाव को खत्म करने एवं समानता, स्वतंत्रता न्याय जैसे बुनियादी मूल्यों को नागरिकों के मनों में डालने के लिये मजबूत प्रयासों की ज़रूरत है। यह आधारभूत मूल्य किसी भी स्वस्थ्य वार्तालाप के लिय पहली ज़रूरत है क्योंकि इन्हीं के अंर्तगत विभिन्न समूह अपनी राय स्वतंत्रतापूर्वक दे सकते हैं। इसी कारण से हमें हर प्रयास करना चाहिये कि नागरिकों के जीवन में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना हो और तब तक विश्राम नही करना चाहियें जब तक कि देश में हर आवाज़ सुनी जाये और मूल्यवान समझी जाये। भारत ने अपनी यात्रा संविधान में दिये गये मूलभूत मूल्यों के प्रति समर्पण के साथ प्रारंभ की है, और यदि संस्थायें सरकार के साथ स्वस्थ्य क्रियाशील संबंध रखना चाहती हैं तो उन्हें भारत के नागरिकों में लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने में निवेश करना चाहिये क्योंकि यही नागरिक किसी ना किसी रूप में सरकार का हिस्सा बनते हैं। इसी के द्वारा "सरकार के साथ कार्य" करना वास्तविक स्वरूप में हकीकत का रूप ले सकेगा।

सफलता की कहानियाँ

सामुदायिक स्वास्थय एवं विकास परियोजना, फतेहपुर
(डॉ. सुनीता वर्गीस, परियोजना निदेषक)

राष्ट्रीय शहरी स्वास्थय मिशन के पदार्पण के पहले से फतेहपुर शहरी गरीब बस्तियों मे विकासकार्यों में संलग्न है। 2009 में हमारे द्वारा संपादित ''आवश्यकता निर्धारण'' से यह प्रदर्शित हुआ कि कुछ क्षेत्रों में टीकाकरण दर बहुत निम्न हैं। हमने तत्कालीन जिला टीकाकरण अधिकारी को इस योजना के साथ संपर्क किया कि मिशन अस्पताल की नर्सों की सहायता से टीकाकरण के कार्य को संपादित किया जा सके। वे इस योजना से सहमत नहीं हुये अतः हमें इस प्रस्ताव को छोड़ना पड़ा। कुछ समय पष्चात् जब परिणाम प्रदर्शित हुआ तब उन टीकाकरण अधिकारी ने मदद के लिये हमें संपर्क किया। तब तक समुदाय के साथ हमारे अच्छे संबंध स्थापित हो चुके थे। टीकाकरण अधिकारी ने हमें टीकाकरण की सूक्ष्म योजना में सहयोग करने को कहा जिससे न्यूनतम टीकाकरण क्षेत्रों में कार्य किया जा सके। हमनें अपना सहयोग प्रदान किया। लेकिन हमने देखा कि जब योजना क्रियान्वयन की बात आती है तो सरकारी नर्सों के पास आवागमन के साधनों की उपलब्धता ना होने के कारण टीकाकरण के लिये वे इतने वृहद क्षेत्र में निर्धारित दिन में नहीं पहुँच सकती थी। अतः हमने तीन तरह से उनकी सहायता करना प्रारम्भ किया– सर्वप्रथम हमने समुदायों में लोगों को टीकाकरण की महत्ता से अवगत कराया जबकि वे लोग टीकाकरण से घबराते थे एवं टीकाकरण संबंधी भ्रामक बातों पर उनका विश्वास था। दूसरा हमने यह सुनिश्चित किया कि नर्स के समुदाये में पहुँचने के दौरान ही समुदाय के लोग वहाँ उस समय उपस्थित हो जायें। एवं तीसरा हमने नर्स को एक बस्ती से दूसरे बस्ती में जाने के लिये अपने दुपहिया वाहनों द्वारा सहायता की। ये संपूर्ण कार्य हमने एक–डेढ़ वर्ष तक किया। जिसके फलस्वारूप उस क्षेत्र में टीकाकरण 15 प्रतिशत से 50 प्रतिषत तक पहुँच गया। सरकार ने हमारे द्वारा दी गई सहायता के लिये आभार प्रकट किया, जबकि तब से हमने दोपहिया वाहनों द्वारा सहायता समाप्त कर दी है। यह हमारे लिये एक अच्छा उदाहरण है कि हम किस तरह एक स्थिति को दोनों ही पक्ष की विजयी स्थिति में परिवर्तित कर सकते हैं एवं लोगों के लिये सरकार के साथ कार्य कर सकते हैं।

सरकार के साथ साझेदारी

(द्वारा प्रभुदत्त नायक, परियोजना प्रबंधक, प्रेरणा)

सरकार देश की सबसे बड़ी विकास कार्यों की संस्था है और हमें गैर सरकारी संगठन होने के नाते यह स्वीकारना चाहिये। हम बेहतर समाज के अपने स्वपन को स्वयं पूरा नहीं कर सकते। समुदायों की आवश्यकतायें बहुत ज्यादा हैं एवं समाज की समस्यायें बहुत जटिल हैं। हमारे लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्रारम्भ करने के लिये हमें सरकार के साथ (चयनित एवं नियुक्त अधिकारियों) कार्य करने की आवश्यकता है।

हमारी भारतीय संस्कृति अथवा हमारी सोच कुछ इस तरह की है कि यदि हमें किसी विशेष विभाग में कोई कार्य है तो सर्वप्रथम हमारे दिमाग में यह ख्याल आता है कि उस विभाग में कोई हमारा परिचित है? यदि नहीं तो हम हमारे नज़दीकी मित्रों में यह जानने का प्रयास करते है जिससे की हमारा कार्य आसानी से हो जाये । अतैव ऐसी सोच अथवा कार्य प्रणाली, प्रक्रिया की अपेक्षा व्यक्ति एवं सरकारी अधिकारियों के आपसी संबंधों को ज़्यादा महत्व देती है ।

अतः यह किस तरह सभंव है कि सरकार के साथ स्वस्थ्य संबंध हो सकें?

सरकार के साथ स्वस्थ्य (अच्छे) संबंध होना तभी संभव है जब दोनों ही पक्षों के पास एक समान उददेश्य हों । उददेश्य प्राप्ति संबंधी स्पष्ट भूमिकायें एंव आपस में उचित वार्तालाप के फलस्वरूप वातावरण में ऐसा संबंध होगा जहाँ दोनों ही पक्ष एक दूसरे के बगैर उचित तरह से कार्य नही कर पायेंगे । उदाहरण के लिये यदि गरीबी दर घटाने हेतु सरकार की

प्रतिबद्धता कमज़ोर है तो हम पायेंगे कि वार्तालाप एवं साझेदारी में कार्य करना निरर्थक होगा। अथवा परिणाम विफल होंगे ।

किसी सरकारी मंत्रालय अथवा विभाग के साथ सहकारिता संबंध स्थापित करने मे प्रयास व समय लगता है। हमें आवश्यकता है मंत्रालयों में ऐसे प्रभावशाली समवर्णियों को खोजने की जिनके मूल्य, उददेश्य व दर्शन हमसे मेल खाते हों। फिर हम उनके साथ कार्य करें। जिससे कि हम उनके साथ विश्वास निर्माण कर सकें । सशक्त संबंध – साझे उददेश्यों, विश्वास अथवा एक ही तरह के लाभ पर आधारित होते हैं जब हम सरकार के साथ मज़बूत संबंध बनाते हैं एवं उन्हें अपना समवर्णी बनाते है तब हम एक साथ बहुत अधिक सिद्व कर पाते हैं। साझेदारी विभिन्न आकार लेती रहती है अनौपचारिक से अनिश्चित एवं अनिश्चित से औपचारिक एवं व्यवस्थित।

हम जानकारी सुझावों एवं अनुभवों को बाँटने के द्वारा संबंधों का निर्माण कर सकते हैं। हम उच्च स्तरीय संगठित एंव संयुक्त तत्वाधान में संबंधों का निर्माण कर सकते हैं जहॉ हम परियोजनाओं को तैयार कर सकें, धन इकट्ठा कर सकें एवं परियोजनाओं को एक साथ चला सकें । जब दोनों ही दल ये देखेते है कि उनके समाधान प्रतियोगी नहीं अपितु सहयोगात्मक रूप से एक दूसरे के पूरक हैं तो साथ काम करने की एक सच्ची संभावना को अवसर मिलता है ।

सरकारी प्रशासनिकों के साथ स्वस्थ एंव पूरक संबध को वेहतर बनाने हेतु कुछ सरल तरीके नीचे दिये गये है निको हम प्रायोगिक रूप से प्रयोग में ला सकते हैं:

- ★ एक दूसरे की भूमिका क्या है एवं क्या होनी चाहिये, की पहचान करें।
- ★ संबंधित विभागीय प्रमुखों को समय समय पर रिपोर्ट देते रहें।
- ★ विभिन्न स्तर की सभाओं में सक्रियता से भाग लें ।
- ★ सरकार को हमारे शोध प्रयासों में सहभागी बनायें।
- ★ सरकार को हमारे कार्यक्रमों एवं योजनाओं की जानकारी देते रहे ।
- ★ कार्यक्षेत्र से संबंधित असुगम गाँवों सरकारी कर्मचारी के साथ यात्रा करें।
- ★ उन्हें हमारे अनेक कार्यक्रमों, प्रशिक्षण सत्रों एवं परियोजना उद्घाटनों में आमंत्रित करें ।

अतः सरकार के साथ स्वस्थ्य संबंधों में कौन से अवरोधक हैं?

हम अकसर विरोधी खेमे में चले जाते हैं एवं सरकार हमें लोगो की तर्कसंगत विशेष आवाज के रूप में देखने लगती है फलस्वरूप हमारे और उनके मध्य दूरियाँ बन जाती हैं। जबकि यदि हम दूसरा पक्ष देखें तो कई बार हम भी सरकार से दूरियाँ बना कर रखते हैं, वार्ताओं के प्रति अनिच्छा रखते हैं फलस्वरूप हमारे मध्य समकक्षता में कमी आने लगती है । हममें से कुछ लोग सरकारी धुरी से बिलकुल ही दूर रहकर कार्य करना पसंद करते हैं जिससे कि सरकार का ध्यान हम पर ना रहे फलस्वरूप उनकी गतिविधियॉ से भी हमारी नियंत्रण हट जाता है । सरकार के लिये अति नित्य शिकायत है भ्रश्ट्राचार जो कि महामारी की तरह फैल गया है एवं यह राज्य निर्माण के प्रयासों को नश्ट कर देता है ।

निष्कर्ष : सरकार को अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिये हमारे साथ की आवश्यकता है क्योंकि गैर सरकारी संगठन होने के नाते हमारा संबंध हमारे समुदायों के साथ काफी गहरा है । हमारे पास यह क्षमता भी है कि उच्च स्तरीय लचीलेपन एवं संरचनात्मकता के साथ विकास के सहभागितापूर्ण तरीकों के साथ उन अंतरों को भर सकें जहाँ सरकारी कर्मचारियों को गरीबों या हाषिये पर रहने वाले लोगों तक पहुँचने में समस्या हुई। एक तरह से हम समुदाय में एक सकारात्मक परिवर्तन को लाते हुये एक दूसरे का पूर्ण करते हैं। यह तभी संभव है जब हम सरकार के साथ स्वस्थ्य संबंधों का अनुसरण करेंगें।

सदंर्भ : http://www.gdrc.org/ngo/state-ngo.html

:: साक्षात्कार ::

श्री लॉरेन्स सिंह

परियोजना समन्वयक (एग्नेस कुन्ज़े सोसाईटी-होप, देहरादून) के साथ एक साक्षात्कार

द्वारा फीबा प्रकाश–सहसंपादक, सफर

सफर–*कृपया आप अपने संगठन 'होप' एवं इसके द्वारा किये गये मुख्य पहल के बारे में बतायें।*

श्री लॉरेन्स सिंह– एग्नेस कुन्जे, होप सोसाइटी ने 10 वर्श से भी ज़्यादा समय से सड़क पर रहने वाले बच्चों अथवा शहरी बस्तियों के बच्चों को शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान करते हुये अपना कार्य आरंभ किया था। अब यह परियोजना स्वास्थ्य, शिक्षा, सशक्तिकरण एवं वकालत जैसे अंर्तसबन्धित क्षेत्रों में बच्चों एवं गरीबों की सहायता करती है।

हम लोगों की गरिमा एवं क्षमता को बढ़ाते हुये उनकी सहायता करते हैं जिससे कि वे स्वयं की सहायता कर सकें एवं अपने आस पास रहने वालों की सहायता कर सकें, परिणामस्वरूप लोगों के जीवनों में निरन्तर परिवर्तन होता रहे। सिस्टर एग्नेस कुन्जे के दर्शन को ध्यान में रखते हुये हम कभी भी धन को प्रत्यक्ष रूप से नही वितरित करते बल्कि इन कोषों का उपयोग लोगों के सामेकित विकास के लिये करते हैं।

हमारा मिषन ज़रूरतमंद बच्चों एवं समुदायों का सहयोग करना है चाहें उनकी पृष्ठभूमि, जाति, नस्ल, धर्म, लिंग जो भी हो। सिस्टर एग्नेस कुंजे के इस दर्शन के अनुसार कि इंसान को एक दूसरे से प्रेम करना चाहिये ।

हम एक समर्थ करने वाले पर्यावरण की रचना करते हैं एवं जिसमें हम बच्चों एवं समुदायों को प्रत्यक्ष रूप से सभी विकासत्मक क्षेत्रों में जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक विकास एवं पोषण एवं स्वच्छता सम्बन्धी जागरूकता, बच्चों की देखभाल, परवरिष, शिक्षा, आसानी से नौकरी प्राप्त हो सकें, ऐसे कौशल आदि में व्यवसायिक सहायता प्रदान करते हैं।

सफर– *आपके संगठन द्वारा अपनायी जाने वाली वे मुख्य रणनीतियाँ कौन सी हैं जिन्हें आप संगठन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल समझते हैं?*

श्री लॉरेन्स सिंह– हम एक 'टीम' आधारित संरचना के अनुसार कार्य करते हैं जो कि परंपरागत संरचना से भिन्न हैं। यह टीम आधारित संरचना संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करती हैं। हमारे प्रबंधक प्रशिक्षकों की तरह कार्य करते हैं। एवं टीम के लोग नियमित निर्णयों के लिये स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं। हमारी सम्पूर्ण टीम उद्देश्य निर्धारण एवं कार्य निष्पादन के आंकलन के लिये स्वयं ज़िम्मेदार होती है। अतैव हम कार्य पर साझे उद्देश्यों पर केंद्रित हो पाते हैं एवं किसी विशेष मुद्दें के लिये अस्थायी टीम या टास्क फोर्स का इस्तेमाल करते हैं। संक्षेप में हमारी रणनीति सहभागिता एवं पारस्परिक सक्रियता की है।

सफर– *विभिन्न प्रयासों में परिणामों की निरन्तरा के लिये सरकार के साथ साझेदारी में कार्य करना कितना महत्वपूर्ण है?*

श्री लॉरेन्स सिंह– सरकार के साथ साझेदारी महत्वपूर्ण है क्योंकि सरकार हमारे दर्शन, संसाधनों, विशेषज्ञता, तंत्रों को बांटती है ताकि एक विषेश क्षेत्र अथवा समुदाय में बेहतर एवं अर्थपूर्ण प्रभाव हो। इसके अलावा परियोजना के प्रारम्भ से ही सरकार के साथ साझेदारी होना परियोजना की सफलता को सुनिश्चित करने में सहायक होता हैं। श्रेश्ठ परिणामों के फलस्वरूप सरकार अपने हस्तक्षेप को बनाये रखती है। एवं समान आवश्यकताओं वाले क्षेत्रों में इन्हीं प्रयासों व प्रारूपों को लागू भी कर सकती है। यदि सफलता

प्रमाणिक होती है तो सरकार परियोजना को बढ़ा भी सकती हैं।

सफर– सरकार के सहयोग से कोई कार्यक्रम या प्रयास आपके संगठन द्वारा वर्तमान में किये जा रहें हों? सरकारी प्रषासनिकों से पूर्ण सहयोग प्राप्त करने के लिये आप कौन सी रणनीति अपना रहे हैं?

श्री लॉरेन्स सिंह–*हमारे संगठन व सरकार की साझेदारी में अनेक कार्यक्रम चलाये रहे हैं जैसे कि:*

★ होप एकेडमी एवं उच्च शिक्षा परियोजनायें (शिक्षा विभाग के साथ)

★ तपेदिक नियंतत्र–डॉट्स परियोजना (रिवाइज़्ड नेशनल टयूबरकोलोसिस प्रोग्राम के साथ)

★ एच.आई.वी. एड्स–सामुदायिक देखभाल केंद्र (राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण समिति एवं उत्तराखंड, राज्य एड्स नियंत्रण समिति के साथ)

★ एच.आई.वी. एड्स– एकीकृत परामर्ष एवं जॉच केन्द्र (राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण समिति एवं उत्तराखंड, राज्य एड्स नियंत्रण समिति के साथ)

★ एच.आई.वी. एड्स–सी एस सी (राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण समिति, एच.आई.वी.एड्स एलायन्स एवं उत्तराखंड राज्य एड्स नियंत्रण समिति के साथ।

★ एच.आई.वी. एड्स एवं तपेदिक जागरूकता कार्यक्रम एवं स्वास्थ्य शिविर (स्वास्थय विभाग के साथ)

हम सुनिश्चित करते हैं कि सरकार के साथ साझेदारी में परियोजना के उद्गम से ही परामर्श होता रहे, एवं हम आपस में ज़ानकारियों को साझा करते रहें। हम ध्यान रखते हैं कि गतिविधियों की पुनरावृति ना हो एवं एक पूरक साझेदारी को हासिल करने के लिये सभी प्रयासों व क्रियाकलापों में क्रियान्वयन के दौरान आपसी मेल हो।

सफर– *सरकार के साथ कार्य करने के दौरान आप किस तरह की चुनौतियों का सामना करते हैं? आप इन चुनौतियों का सामना किस तरह करते हैं?*

श्री लॉरेन्स सिंह– हम ऐसा महसूस करते हैं कि हमें किसी भी परियोजना के उद्गम से पहले से ही सरकार से बातचीत करते रहना चाहिये, सम्भव है कि हमारे उद्देश्य व प्राथमिकतायें भिन्न हैं। कई बार सरकार की ओर से मिलने वाले प्रत्युत्तर का समय काफी दीर्घ हो जाता है एवं आपसी बातचीत सम्भव होना भी एक मुद्दा हैं। कई बार आपसी संबंध असक्षम एवं अत्यधिक समय लेने वाले हो जाते हैं।

हम प्रार्थना के द्वारा रोष को प्रकट ना करते हुये अपने मुद्दे को जीवित रखते हुये चुनौतियों का सामना करते हैं।

सफर– *सरकार के साथ काम करने के दौरान अत्यधिक सहयोग एवं परिणाम को सुनिष्चित करने के लिये किन सिद्धातों को ध्यान में रखना आवष्यक होता है?*

श्री लॉरेन्स सिंह– सरकार के साथ कार्य करते समय विशेष रूप से ध्यान में रखे जाने वाले सिद्धांत हैं:

★ एक परामर्शीय प्रक्रिया रखें एवं जानकारियों के आदान प्रदान हेतु सम्बन्ध स्थापित करें, आपसी अनुभवों सुझावों एवं विचारों को बाँटते हुये एक दूसरे को जानें।

★ गतिविधियों की पुनरावृत्ति ना हो एवं क्षेत्रीय कार्यों आदि में सक्षमता अधिक होने के लिये प्रयासों में आपसी तालमेल हों।

★ एक समान कायक्रम प्रारूप के निर्देशानुसार कार्य करें व एक दूसरे को सहयोग दें।

★ दीर्घकालीन साझेदारी संस्थागत होनी चाहिये जिससे कि लंक्षित समुदायों को सेवा प्रदान करने में निरंतरता बनी रहे।

सफर– *समुदायों अथवा/शहरी विकास के लिये कार्य करने वाले गैर सरकारी संगठन किस तरह से सरकार के साथ कार्य कर सकते हैं एवं सरकार के कार्यक्रमों में सहयोग दे सकते हैं?*

श्री लॉरेन्स सिंह– इन कार्यक्रमो में संलग्न गैर सरकारी संगठन सरकार की सहायता कर सकते हैं सेवाओ के द्वारा एंव सरकार को यह सुनिष्चित करवा कर कि उनके कार्यक्रम सक्षम हैं प्रभावशाली हैं एंव बेहतर तरह से तैयार किये गये हैं ज़ितका कि निरंतर मूल्यांकन किया जाता हैं। हम यह सुनिश्चित करते हुये उनकी सहायता कर सकते हैं कि सामाजिक न्याय, समानता एवं लोगों का सशक्तिकरण प्रत्येक कार्यक्रम के हृदय में हो एवं सरकार को यह सुझाव दे सकते है कि वे विकास के स्वविश्वासी एवं निरंतर चलने वाले प्रारूपों पर ध्यान दें।

धन्यवाद श्री लॉरेन्स आपके महत्वपूर्ण समय व विचारों के लिये।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी के साथ मुलाक़ात–सिलेक्यू राज्य मानसिक चिकित्सालय। फोटो – कैरन मथ्यास

स्वास्थय निदेषक उत्तराखंड एवं राज्य नोडल अधिकारी एवं सामुदियक प्रतिनिधि, इ.एच.ए. एवं मानसिक स्वास्थय परियोजना के उद्घाटन के दौरान। फोटो – कैरन मथ्यास

सरकार के साथ कार्य करना

(पुनीता कुमार, कार्यक्रम, प्रबंधक, वकालत)

लोकतांत्रिक सरकार की परिभाषा होती है, ''वह सरकार जिसका चयन लोगों के द्वारा अथवा उनके चुने हुये प्रतिनिधियों के द्वारा किया गया हो''। परंतु सरकार को व्यवस्था के कार्यों को निष्पादित करने के लिये एक देह की आवश्यकता होती है। यहा देह विभिन्न विभागों के द्वारा हासिल की जाती है और इसे नौकरशाही कहते हैं यह सरकार का वह हिस्सा है जो उन अधिकारियों एवं प्रशासकों से निर्मित होता है जो कि सरकार के लिये कार्य करते परंतु चुने नहीं जाते वरन् नियुक्त होते हैं। अतैव सरकार चलाना नौकरशाही चलाने से फर्क है, जोकि वास्तव में सरकार चलाती है।

सरकार के साथ कार्य करना एक विशाल विषय है जिसको पूर्ण रूप से समझने के लिये प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं की आवश्यकता होती है। सरकार के साथ कार्य करना एक वकालत की प्रक्रिया है जिसे मार्क डेनले (भूतपुर्व वकालत कार्यक्रम अधिकारी इ.एच.ए.) ने वकालत प्रषिक्षण के द्वारा बहुत अच्छी तरह से पढ़ाया।

मैं विश्वास करती हूँ कि हमें सरकार के साथ अथवा नौकरशाहों के साथ हर समय हर स्थितियों में कार्य करना चाहिये और अपने कार्यक्रमों तथा गतिविधियों में सरकार को मुख्य धारा में लेकर चलना चाहिय, मात्र तभी नहीं जब हमारे पास धन की कमी हो। हाल ही में यह तरीका संसाधनों की कमी की वजह से प्रचलित हुआ है परंतु वास्तव में इसी पद्धति के इस्तेमाल से बड़े प्रशासनिक तंत्र को क्रियाशील एवं जवाबदेह बनाया जा सकता है। हम सरकारी नीतियों एवं कल्याणकारी योजनाओं के फायदे एवं कमियाँ पता कर सलाह/सुझाव तभी दे सकतें हैं जबकि हम उनके साथ कार्य करें। हमें उन्हें अपना विरोधी नहीं समझना चाहिये हालांकि हम देरी, सुस्ती या संभावित भ्रष्टाचार का अनुभव करते हैं। हमें उनके साथ कार्य करना चाहिये ना सिर्फ अपने आस–पास बदलाव लाने के लिये बल्कि स्वयं में और हमारे द्वारा दूसरों में।

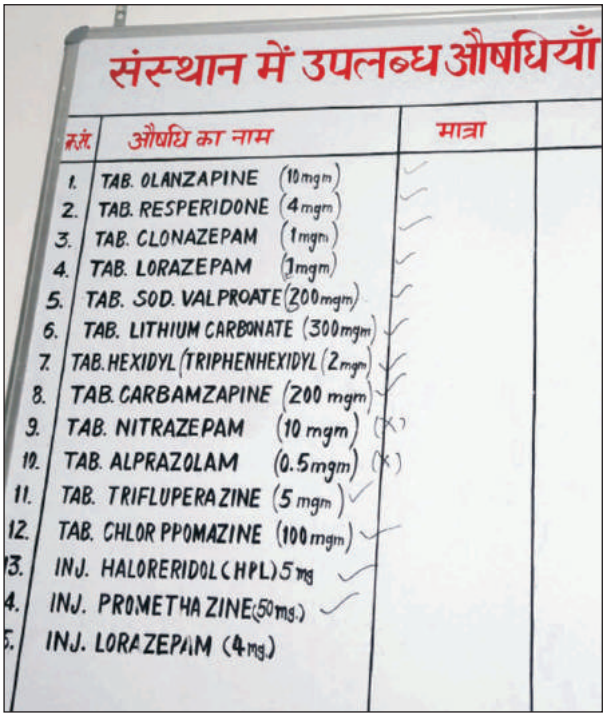

सरकारी स्वास्थय सुविधाओं में उपलब्ध सेवायें एवं दवाईयों का दस्तावेजीकरण करते हुये– फोटो– कैरन मध्याम

एच.आर. गतिविधियाँ

[*by: Ms. Hemlatha*]

नाम	पदनाम	परियोजना
नियुक्तियां		
दीपिका टिकवाह	सामुदयिक समन्वयक	शहरी परियोजना, आगरा
सैमसन राणा	परियोजना सहायक	बुरांस परियोजना
सुमीत कुमार लीमा	लेखापाल	डंकन एस. वी. जे. परियोजना
मुकेष कुमार पासवान	सामुदयिक समन्वयक	डंकन अषीश परियोजना
पॉल नायक	सामुदयिक समन्वयक	डंकन नयी रोषनी परियोजना
प्रमोद राम	सामुदयिक समन्वयक	डंकन अषीश परियोजना
असुता हेमब्रौम	सामुदयिक समन्वयक	डंकन अषीश परियोजना
संदीप कुमार	सामुदयिक समन्वयक	डंकन अषीश परियोजना
संतोश कुमार सिह	सामुदयिक समन्वयक	डंकन अषीश परियोजना
सुलेमान सोरेन	सामुदयिक समन्वयक	डंकन अषीश परियोजना
नीरज कुमार	सामुदयिक समन्वयक	सी. एच. डी. पी. फतेहपुर
मेधना बदोला	ऑरथोटिक टेकनीषियन	हरबर्टपुर–अनुग्रह परियोजना
ललन कुमार	सामुदायकि समन्वयक	माधेपुरा, आलमनगर परियोजना
कमल चंद्रसेन	परियोजना समन्वयक	छत्तरपुर पैकस परियोजना
अगस्टीन	सामुदयिक समन्वयक	सहयोग परियोजना
वरनबास माहूकल	सामुदायिक समन्वयक	सहयोग परियोजना
कुषल कुमारी	सामुदयिक समन्वयक	सहयोग परियोजना
ष्वेता मसीह	परियोजना अधिकारी	सहयोग परियोजना
कृपा दान	चालक	संपदना सी. एच. डी. परियोजना
अनेसिमस	परियोजना अधिकारी	सी एच डी तेजपुर
प्रीति लामा	परियोजना अधिकारी	सी एच डी तेजपुर

आगे होने वाली गतिविधियों

सी.एच.डी.पी. अर्धवार्षिक रिर्पोटिंग सभा

दिनांक– 27–29 अक्टूबर 2015, स्थान– नवीनथा, नई दिल्ली

विषय– सामुदायिक परिवर्तन

सामुदयिक स्वास्थ्य वार्षिक सम्मेलन 2015 तस्वीर – थॉमस जॉन

सीएचडीपी समाचार

★ श्री कुलदीप सिंह ने भारत सरकार के ज्वाइंट मॉनीटरिंग मिशन में एक विशेषज्ञ की तरह अप्रैल 2015 के त्छज्ब्ब के पुनरावलोकन में भाग लिया।

★ सी.एच.डी.पी. की वार्षिकरिर्पोटिंग सभा, देहरादून के सी.आर.एस.सी. में 28 अप्रैल से 2 मई 2015 को संपन्न हुई।

सफर का अगला अंक

सफर का 20 वां अंक केन्द्रित होगा

"एस.एच.जी. और सी.बी.ओ."

कृपया अपने योगदान को 15 सितम्बर, 2015 तक फेबा प्रकाश को भेजें। (fjacob@eha-health.org)

संपादक – कारेन मथियास

उप संपादक – फेबा प्रकाश

लेआउट और ग्राफिक – लून थामटे

Click to download this issue in .pdf

हमसे सम्पर्क के लिए
808/92, दीपाली बिल्डींग,
नेहरू प्लेस, नई दिल्ली–110019
फोन न.: 011–3088–2008 और 3088–2009
वेब: www.eha-health.org